भारत-चीन तनाव : कारण और निदान

डॉ. रजनी दुबे
प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

चीन और भारत के बीच सीमा विवाद और प्रतियोगी भावना हमेशा रही है लेकिन बढ़ती आर्थिक निर्भरताओं के कारण ये भावना दबती नजर आ रही थी, लेकिन गलवान घाटी में हुई झड़प ने दोनों देशों के बीच फिर से वही कड़वाहट पैदा कर दी है। ऐसे में चीन और भारत के रिश्ते जल्द ही फिर से पटरी पर आने मुश्किल लग रहे हैं इस हालात में चीन से बिगड़ते संबंधों के बीच भारत के पास संतुलन बनाने के लिये कौन से विकल्प है भारत किस तरह दक्षिण एशिया में चीन का सामना करते हुये अपनी स्थिति मजबूत कर सकता है जिसका आंकजन इस शोध पत्र में किया गया है।

मुख्य शब्द - भारत चीन विवाद, स्वतंत्र, राष्ट्र।

ईसा के जन्म से 500 साल पहले चीन के नामचीन फौजी जनरल 'सुन जु ने आर्ट ऑफ वॉर' नाम की किताब में लिखा था "जंग की सबसे बेहतरीन कला है कि बिना लड़े हये ही दुश्मन को परास्त कर दो" सैकड़ों साल बाद भी चीन में इस किताब की बातों का लोहा माना जाता है, ठीक उसी तरह जैसे भारत में चाणक्य नीति को माना जाता है। भारत-चीन के बीच फिलहाल जारी बार्डर तनाव को समझने के लिए शायद 'जंग की इस वेहतरीन कला को ध्यान में रखने की भी जरूरत है। जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी के चीनी अध्ययन केंद्र में प्रो. श्रीकांत कोडापल्ली का मानना है कि भारत चीन के बीच रिश्ते ठीक होना बहुत मुश्किल लग रहा है साथ ही उनका मानना है कि "चीन के खिलाफ बनी एक राष्ट्रीय धारणा का भी कारोवार पर असर पड़ेगा चीनी सामानों का वहिष्कार करने की अपील की जा रही है, ऐसे में संबंधों को सामान्य बना पाना आसान नहीं होता हालॉकि कूटनीति और कारोवार हमेशा चलते रहते हैं लेकिन बाहरी तौर पर गर्मजोशी नहीं रहती कारोबारी निर्भरता वढ़ने से जो लोगों में संपर्क वढ़ा था और दूरी कम हुई थी, उसे वापस आने में समय लगेगा"। भारत और चीन आपसी सहयोगी भी है और प्रतियोगिता भी ऐसे में यदि बिगड़ते संबंधों के साथ चीन भारत के लिये चुनौती बनकर आता है तो भारत के लिये उसका सामना करने और संतुलन बनाने के लिये क्या विकल्प होंगे।? विशेषज्ञ मानते हैं कि भले ही दोनों देशों के वीच रिश्ते कितने भी बेहतर दिखे लेकिन एक आंतरिक दूरी और प्रतियोगिता बनी रहती है। दोनों देशों की अपनी महत्वकांक्षायें है इसलिये भारत एशिया में चीन के साथ संतुलन बनाने के लिए पहले से ही प्रयास करता है। अब उसे अपने प्रयासों में तेजी लानी होगी इसमें दो प्रमुख तरीके हैं- भारत की 'एकट ईस्ट' पॉलिसी और पश्चिमी देशों से चीन की दूरी और भारत

की मजबूती भारत की लुक ईस्ट नीति 1991 में तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने शुरू की थी, जिसे प्रधान... नरेन्द्र मोदी ने 2014 में एक्ट ईस्ट नीति में बदल दिया, इसके तहत भारत ने एशिया के दूसरे देशों में आर्थिक विक... के अवसर खोजने पर जोर दिया। लेकिन आर्थिक फोकस वाली भारत की ये नीति धीरे-धीरे कूटनीति हो गई भा... दक्षिणी पूर्वी देशों से संबंध और व्यापार बढ़ाना चाहता है।

म्यांमार से भारत की सीमा लगती है। जो भारत के लिये दक्षिण पूर्व एशिया का गेटवे है। भारत थाई... और म्यांमार 1400 किलोमीटर लंबे एक हाइवे पर काम कर रहें है। दक्षिण एशियाई देशों जैसे थाईलैंड, वियतना... सिंगापुर, फिलीपीस और कंबोडिया जैसे देशों के साथ संबंध प्रगाढ़ करने की इस नीति को चीन के साथ संतुलन बना... रखने की नीति के तौर पर भी देखा जाता है। श्रीकांत कोडापल्ली कहते हैं कि इस नीति में तीन चीजें हैं- कॉम... कनेक्टिविटी और कल्चर पूर्व विदेश मंत्री स्व. सुषमा स्वराज ने इन तीन 'सी' का जिक्र किया था। भारत को पह... इन देशों के संबंध मजबूत करके अपनी क्षमता बढ़ानी होगी चीन के साथ संतुलन तभी बनेगा जब हम क्षमतावा... होंगे। एक्ट ईस्ट पॉलिसी में भारत सरकार अपना आधारभूत ढ़ाचा विकसित करने की कोशिश कर रही है, जैसे सड़कें और हाइवे बनाना साथ ही कारोबार बढ़ाने पर भी सरकार का फोकस है। आसियान (दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्र का संगठन) देशों के साथ भारत निवेश बढ़ा रहा है। वही यदि हम संस्कृति की बात करें तो कुछ दक्षिण एशियाई देशों के साथ भारत की संस्कृति मिलती-जुलती है इस समानता को उभारकर देशों के साथ घनिष्ठता बढ़ाई जा सकती है। आसियान का उद्देश्य ही है कि सदस्य देशों की संप्रभुता, क्षेत्रीय अखण्डता और स्वतंत्रता को कायम रखा जाये, साथ ही झगड़ों का शांतिपूर्ण ढंग से निपटारा हो। भारत और चीन दोनों ही एक दूसरें के पड़ौसियों पर प्रभाव बढ़ाने की कोशिश करते है, लेकिन चीन ने जिस तरह विवादित क्षेत्रों में आक्रामक रूख अपनाया हैं, इससे उस क्षेत्र के देशों की चिंतायें बढ़ी हैं और भारत को इससे अपना असर बढ़ाने में मदद मिली है। विशेषज्ञ भारत के लिये इसे एक मौका मानते हैं। दक्षिण चीन सागर के नटूना आइलैंड पर अधिकार को लेकर चीन का इंडोनेशिया के साथ सालों से विवाद चल रहा है। दक्षिण चीन सागर मे ही पारसेल आईलेंड्स को लेकर चीन और वियननाम आमने-सामने हैं। दोनों देशों के बीच स्पार्टी आइलैण्ड्स को लेकर भी विवाद चल रहा है, दक्षिण चीन और सागर मे ही जेम्स शोल पर चीन और मलेशिया दोनों अपना दावा करते है। चीन, दक्षिण चीन सागर पर भी अपना दावा करता है। इसके कारण आस-पास के देशों के साथ इसका तनाव तो पहले से ही है, लेकिन अब अमरीका, ऑस्टेलिया और जापान ने भी दक्षिण चीन सागर में अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री कानून के तहत नौवहन का मुद्दा उठाकर चीन को चेतावनी दी है।

ये परिस्थितियां भारत के पक्ष मे कितनी जानी है इसे लेकर सिटी यूनीवर्सिटी ऑफ लंदन में रिसर्च फेलो और चीन मामले के जानकर अतुल भारद्वाज कहते है कि भारत अकेला ही चीन के साथ संतुलन नहीं बना सकता। ऐसे में भारत को दूसरे देशों के साथ मिलने से मदद मिल सकती है, इसे लेकर भारत को अपने प्रयास तेज करने होगें। वहीं कि भारत इन देशों से संबंध बेहतर करके ना सिर्फ चीन की चिंताये बढ़ा सकता है बल्कि खुद को मजबूत भी कर सकता है। उदाहरण के तौर पर भारत और जापान के बीच तीन-चार क्षेत्रों में टू प्लस टू वार्ता बढ़ाने की

कोशिश की गई जापान भारत को अर्थव्यवस्था और तकनीक के स्तर पर मदद कर रहा है। जैसे बुलेट ट्रेन और दिल्ली-मुम्बई इनवेस्टमेंट कॉरिडोर के लिये जापान ने भारत को कर्ज दिया ।

"इसी तरह जापान एक समुद्री ताकत है जिससे भारत अपनी क्षमतायें बढ़ा सकता है तीसरा अंतरिक्ष में और चौथा बैलिस्टिक मिसाइल डिफेंस जैसे क्षेत्रों में भारत और जापान सहयोग कर रहें है यदि भारत इन देशों के साथ संबंध बढ़ायेगा तो इससे बाजार और अर्थव्यवस्था बढ़ेगी, इससे लोगों का संपर्क और परिवहन बढ़ जाता है"।

ऐसे वक्त में जब अमेरिका आस्ट्रेलिया और कई यूरोपीय देश चीन को कोरोना वायरस के प्रसार और गलत जानकारी देने के लिये जिम्मेदार ठहरा रहे है। चीन पर जानकारी छिपाने से लेकर जैविक हथियार बनाने तक के आरोप लगाकर चीन को घेरने की कोशिश कर रहे है।

अब क्या भारत इस गठजोड़ का हिस्सा बनकर चीन पर दबाव बना सकता है इस पर अतुल भारद्वाज कहते है - "रणनीतिक रूप से देखे तो भारत पहले से ही उस समूह का हिस्सा है,भले ही ये अधिकारिक नहीं है चीन को नियंत्रित करने के लिये अमेरिका भी भारत का साथ चाहता है"।

हालॉकि भारत कोरोना वायरस को लेकर चीन के खिलाफ उतना मुखर नही है, भारत हमेशा संतुलन बनाने की कोशिश करता है। अगर वो पूरी तरह से पश्चिमी देशों के साथ चला जायेगा तो आगे चलकर इसका असर चीन के साथ कारोबार पर भी पड़ेगा। इसलिये भारत पश्चिमी देशों की तरफ झुकाव तो दिखाता है लेकिन उनके ऐजेंडे में पूरी तरह शामिल नहीं होता उम्मीद है कि यही रूख भारत आगे भी अपनायेगा।

इसके अलावा भारत-चीन संबंधों के मध्य विवादों को दूर करने के लिये कुछ अन्य उपाय भी अपनाये जा सकते है जैसे -

1. दोनों देशों को नेताओं के रणनीतिक मार्गदर्शन का पालन करना चाहिये।
2. मैत्रीपूर्ण सहयोग की सामान्य प्रवृत्ति को विकसित करने पर बल देना होगा।
3. पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग की गति का विस्तार करना चाहिये।
4. भारत व चीन को अन्तर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय मामलों पर समन्वय को बढ़ाना चाहिये।
5. दोनों देंशों को आपसी मतभेदों का उचित प्रबंधन करना होगा।

अंत में आज भारत चीन सीमा पर संकट का सामना करने के लिये उसी देश प्रेम की आवश्यकता है, जिसका परिचय राममनोहर लोहिया और अटल विहारी बाजपेई ने साठ साल पहले दिया था। वर्ष 1962 के चीन युद्ध से पहले चीन पर कड़वा सच बोलने से सब कतराते थे। या तो वे नेहरू से घबराते थे या माओं के मोह में फंस जाते थे। इस माहौल में सबसे पहले राममनोहर लोहिया ने चीन से देश की सुरक्षा को खतरे के प्रति देश आगाह किया था।

एक स्वतंत्र सार्वभौम राष्ट्र होने के नाते भारत को इस चुनौती का समाना अपने शांतिपूर्ण तरीकें से अपना समय चुनकर सामना करना होगा। साथ ही सम्पूर्ण देश को एकजुट होकर संकल्प लेना होगा। एवं भारत को अपने पड़ौसी देशों के साथ संबंधों को मजबूत करना होगा। यही समय की मांग भी है।

संदर्भ :-

1. पुष्पेन्द्र पंत ''भारत की विदेश नीति टाटा मैकग्रा ऐजूकेशन प्रा.लि., नई दिल्ली, वर्ष 2010''
2. डॉ. मुनेश कुमार ''स्वतंत्र भारत की विदेश नीति डिस्कवरी पब्लि. हाउस प्रा.लि., दिल्ली, 2010''
3. डॉ. जे.एन. दीक्षित ''भारत की विदेश नीति और इनके पड़ौसी'' ज्ञान पब्लि. हाउस, नई दिल्ली, 2005
4. डॉ. वेद प्रकाश वैदिक ''भारतीय विदेश नीति नये दिशा संकेत'' नेशलन पब्लि. हाउस नई दिल्ली, वर्ष 1981
5. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह ''भारत चीन संबंध दो कदम आगे चार कदम पीछे'' आर.के. पब्लि. एडं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, वर्ष 2009
6. डॉ. वसीम अहमद खान ''भारत-चीन पाकिस्तान संबंध डिस्कवरी पब्लि.हाउस प्रा. लि., नई दिल्ली, वर्ष 2010''
7. Asian Serrey Series, Vol XI Jan. Feb. 2000

❖ ❖ ❖